# भारत में वोकेशनल एजूकेशन के क्षेत्र में बेहतर कैरियर के अवसर

भारत में हर वर्ष हजारों छात्र–छात्रायें पारंपरिक शिक्षा के माध्यम से स्नातक व परास्नातक की उपाधि प्राप्त कर शिक्षित हो रहे हैं, क्या वे सभी रोजगार पाने में सफल होते हैं?, शायद नहीं। क्या कारण है कि आज का युवा शिक्षित होने के बावजूद भी बेरोजगार है, क्या भारत में शिक्षित युवाओं की संख्या की तुलना में रोजगार कम है, नहीं, बल्कि कमी अगर किसी की है तो वह है स्किल्ड यूथ की।

आज का अधिकतम युवा ट्रेडिशनल एजूकेशन से परिपूर्ण है किन्तु उसमें वोकेशनल एजूकेशन का अभाव है और इस कारण ही वह शिक्षित होते हुये भी बेरोजगार है। आज के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य की मांग है कि युवा पारंपरिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक रूप से भी प्रशिक्षित हो।

वोकेशनल एजूकेशन एक जरिया है, किसी विशिष्ट कैरियर, व्यापार या पेशे के लिये आवश्यक स्किल्स को सीखने का। इसमें अधिकांश पाठ्यक्रम प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर केन्द्रित होते हैं और छात्रों को भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में निपुणता प्रदान करते हुये नौकरी पाने के बेहतर अवसरों में वृद्धि करते हैं।

आज के दौर में वोकेशनल एजूकेशन के क्षेत्र में बहुत सारे ऐसे पाठ्यक्रम हैं जिनके द्वारा छात्र खुद को आत्म निर्भर एवं प्रतिभावान बना सकते हैं। इनमें मुख्य रूप से एवीएशन टेक्नोलॉजी, डीजल मैकेनिक, मरीन मकैनिक, वीडियो गेम डिजाइन, एनीमेशन, मसाज़ थिरेपी, न्यूट्रीशनिस्ट, डाइटीशियन, एकाउन्टिग एवं ऑडिटिंग, फैब्रिकेशन टेक्नोलॉजी, हॉर्टीकल्चर, पोल्ट्री फार्मिंग, फैशन डिजाइनिंग, क्लोदिंग कन्सट्रक्शन, टेक्सटाइल डिजाइनिंग, एक्स–रे टेक्नीशियन, होटल मैनेजमेन्ट एण्ड कैटरिंग सर्विस, ट्रैवल्स एण्ड टूरिज्म, हेयर डिजाइनिंग, एअरलाइन टिकटिंग, मोबाइल रिपेयरिंग, कास्मेटोलॉजी, लाइब्रेरी मैनेजमेन्ट आदि प्रचलित कोर्स हैं जिनसे हजारों–लाखों छात्र–छात्राओं ने अपने भविष्य को निखारते हुए उज्जवल भविष्य बनाया है एवं बना रहे हैं।

ये सभी कोर्स फुल टाइम एवं पार्ट टाइम दोनों ही प्रकार से उपलब्ध होते हैं तथा सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या डिग्री प्रदान करते हैं। चूंकि ये कोर्स ट्रेडीशनल पाठ्यक्रमों की तुलना में कम अवधि के होते हैं, अतः इनकी फीस भी बहुत ही कम होती है, जिसे निर्धन वर्ग के लोग भी वहन कर अपना भविष्य उज्जवल बना सकते हैं। अत्यधिक निर्धन वर्ग के लिये सरकार द्वारा इन कोर्सों को करने के लिये वित्तीय सहायता भी प्रदान करायी जाती है।

स्वयं को अधिक निपुण एवं कौशल से परिपूर्ण बनाने के लिये कामकाजी लोग भी इन कोर्सों को कर सकते हैं क्योंकि इनको करने के लिये समय स्वयं अपनी सुविधानुसार सुनिश्चित करने का प्राविधान भी होता है। श्रमिक जो पूर्ण रूप से प्रशिक्षित होते हैं, की मांग हमेशा अधिक रहती है क्योंकि वे निश्चित रूप से ही काम को बेहतर कर उत्पादकता में सुधार एवं बढ़ोत्तरी करते हैं।

ऐसे पाठ्यक्रमों को करने के बाद स्वरोजगार भी शुरू कर सकते हैं जिससे उद्यमशीलता को बढ़ावा मिलता है, रोजगार में वृद्धि होती है एवं देश की अर्थ व्यवस्था में सुधार होता है।

पूरे भारतवर्ष में ऐसे कई संस्थान हैं जो वोकेशनल एजूकेशन को बढ़ावा देते हुये समय की मांग के आधार पर कई सारे जॉब ओरिएन्टेड पाठ्यक्रम चला रहे हैं। केवल उत्तर प्रदेश में ही लगभग 800 से अधिक ऐसे संस्थान है जहां हजारों छात्र दिन प्रतिदिन इन उपयोगी पाठ्यक्रमों को कर एक विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त करते हैं। वोकेशनल एजूकेशन को भारतवर्ष में बढ़ावा देने में मुख्य रूप से एन0एस0डी0सी0 (नेशनल स्किल्स डेवलपमेन्ट कार्पोरेशन) एवं एम0एस0एम0ई0 (माइक्रो स्माल एण्ड मीडियम इन्टरप्राइजेज) डेवलपमेन्ट इंस्टीट्यूट का अतिमहत्वपूर्ण योगदान है।

**''समय की मांग को ध्यान में रखते हुए शिक्षा ग्रहण करने में ही समझदारी, उन्नति एवं बढ़ोत्तरी होती है।''**